Research Chronicler, International Multidisciplinary Refereed Peer Reviewed Indexed Research Journal
ISSN: Print: 2347-5021 www.research-chronicler.com ISSN: Online: 2347-503X

हिंदी की संयुक्त क्रियाओं में रंजकता

गिरीश चन्द्र पाण्डेय

शोधार्थी एवं लीला प्रभार महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

क्रिया किसी भी भाषा में वाक्य रचना का केंद्र होती हैं। अधिकांश भाषाओं में क्रिया पदबंधों की रचना और प्रयोग कई प्रकार से होता है, जिससे इनके विश्लेषण और वर्गीकरण में कठिनाई आती है। हिंदी एक वियोगात्मक भाषा है, जिसमें क्रिया पदबंध एक मुख्य क्रिया और कुछ सहायक प्रत्ययों, सहायक क्रियाओं अथवा दोनों के योग से निर्मित होता है । हिंदी में चार प्रकार के क्रियाओं की बात की जाती है । ये क्रियाएँ हैं- सरल क्रिया, संयुक्त क्रिया, यौगिक क्रिया एवं मिश्र क्रिया। इनमें से यदि संयुक्त क्रिया की बात की जाय तो इसे परिभाषित करते हुए कहा गया कि संयुक्त क्रिया की रचना दो क्रियाओं के योग से होती है, जिसमें पहली क्रिया की भूमिका मुख्य होती, है अर्थात पहली क्रिया ही क्रियाका मुख्य अर्थ-द्योतक अंश होती है तथा दूसरी क्रिया रंजक होती है । यह मुख्य क्रिया द्वारा व्यक्त किए जा रहे अर्थ में कुछ विशिष्टता ला देती है, जिसे रंजित करना कहा जाता है । अतः संयुक्त क्रिया का सूत्र इस प्रकार दिया जा सकता है-

संयुक्त क्रिया = मुख्य क्रिया + रंजक क्रिया

रंजक क्रिया के स्थान पर आने वाली क्रिया भी मुख्य क्रिया ही होती है तथा अन्य प्रयोगों में वह अपना कोशीय अर्थ देती है, जैसे-

(1) मैंने उसे सामान दिया।

(2) मैंने उसे कह दिया।

उपर्युक्त वाक्यों में से (1) में 'देना' मुख्य क्रिया के रूप में है, जबकि (2) में रंजक क्रिया के रूप में, क्योंकि यहाँ यह संयुक्त क्रिया के द्वितीय अंश का कार्य कर रही है। अतः संयुक्त क्रिया में आने वाली दूसरी क्रिया रंजक क्रिया होती है। पर यह कहना कि हमेशा रंजक होती है; यह भी गलत होगा ।

कहा जा सकता है कि रंजक क्रिया मूलतः संयुक्त क्रिया का हिस्सा है। यह बात तय है कि यदि रंजक क्रिया है तो संयुक्त क्रिया होगी ही होगी परंतु इसका विपरीत सत्य नहीं है। यदि इसको गणितीय भाषा में कहा जाय तो रंजक क्रिया का होना आवश्यक एवं पर्याप्त प्रतिबंध है कि संयुक्त क्रिया है। परन्तु संयुक्त क्रिया का होना आवश्यक तो है पर पर्याप्त प्रतिबंध नहीं है । अवधारणा के पर आधार यदि रंजक क्रिया के वर्गीकरण/विश्लेषण की बात की जाय तो संयुक्त क्रिया के वर्गीकरण की बात पहले करनी होगी। संयुक्त क्रिया के वर्गीकरण के संबंध में बहुत सारे विद्वानों के अलग-अलग मत हैं, किंतु पुराने वैयाकरणों के अनुसार वर्गीकरण के पश्चात संयुक्त क्रिया के जो प्रकार बताये गए हैं, उनके नाम भी वाक्य में प्रयुक्त संयुक्त क्रिया के अर्थ विश्लेषण के आधार पर रखे गए हैं ।

बहुत से भाषाविदों ने अर्थ एवं अवधारणा के आधार पर संयुक्त क्रियाओं का वर्गीकरण किया है। गुरु कामता प्रसाद (हिंदी व्याकरण,1920) के अनुसार अर्थ के आधार पर संयुक्त क्रिया के निम्नलिखित भेद हो सकते हैं –

- आरम्भबोधक संयुक्त क्रिया
- समाप्तिबोधक संयुक्त क्रिया
- अनुमतिबोधक संयुक्त क्रिया
- नित्यताबोधक संयुक्त क्रिया
- इच्छाबोधक संयुक्त क्रिया

- आवश्यकताबोधक संयुक्त क्रिया
- निश्चयबोधक संयुक्त क्रिया
- अभ्यासबोधक संयुक्त क्रिया
- शक्तिबोधक संयुक्त क्रिया
- अवकाशबोधक संयुक्त क्रिया
- पुनरुक्त संयुक्त क्रिया

इस आलेख के द्वारा इन क्रियाओं में रंजकता की वास्तविक स्थिति का विश्लेषण किया गया है -

- **आरम्भबोधक संयुक्त क्रिया** संयुक्त क्रिया से क्रिया के आरम्भ होने की सूचना मिलती है।

जैसे- वह रोने लगा। बरसात होने लगी। छोटू चलने लगा। गीता गीत गाने लगी।

कुछ वैयाकरणों ने 'लगा' को रंजक क्रिया के रूप में माना है, परंतु बहुत सारे विद्वानों ने 'लगा'को रंजक क्रिया नहीं माना है, और यही सही है, क्योंकियहाँ 'लगा' क्रिया मुख्य कार्य के पक्ष की सूचना दे रहा है। अतः कहा जा सकता है कि आरंभबोधकसंयुक्तक्रियाओं में रंजक क्रियाएँनहीं आती हैं।

समाप्तिबोधक संयुक्त क्रिया: जिस संयुक्त क्रिया से मुख्य क्रिया की पूर्णता अर्थात कार्य - व्यापार की समाप्ति का पता चलता है , वह समाप्तिबोधक संयुक्त क्रियाकहलाती है।

जैसे- वह जा चुका है। वह मर चुका है। गीता गाना गा चुकी है। सोहन सो चुका है। आदि

मुख्य क्रिया (समान्यतः धातु रूप) के आगे 'चुका', 'चुकी' आदि जोड़ने से समाप्तिबोधक संयुक्त क्रियाएँ बनती हैं।

यहाँ चुका भी रंजक क्रिया नहीं है, यद्यपि कुछविद्वानों ने चुका को भीरंजक क्रिया के रूप में माना है, परंतु यदि देखा जाय तो 'चुका' क्रिया मुख्य क्रिया के पक्ष की सूचना दे रहा है। अर्थात कार्य के पूर्णता अथवा समाप्ति की सूचना दे रहा है, और'चुका' का मूल अर्थ भी समाप्ति के अर्थ मेंहै। यहाँ'चुका'क्रिया का ना तो अर्थ विस्तार हो रहा है,ना ही अर्थ संकुचन औरना ही किसी विशेष अर्थ में है। अतः हम कह सकते हैं कि समाप्ति बोधकसंयुक्त क्रियाओंमेंभी रंजक क्रियाएँ नहीं आती हैं।

- **अनुमतिबोधक संयुक्त क्रिया**: जिस संयुक्त क्रिया से कार्य करने की अनुमति माँगे अथवा दिए जाने का बोध हो, वह अनुमतिबोधक संयुक्त क्रियाहै।

जैसे- मुझे सोने दो। उसे जाने दो। मुझे बोलने दो। यह क्रिया 'दे' धातु के योग से बनती है। चूंकि दिया एक रंजक क्रिया है एवं इसके प्रयोग की आवृत्ति काफी अधिक है और अनुमति माँगे अथवा दिए जाने वाले वाक्यों में दे धातु का प्रयोग आवश्यक है। अतः कहा जा सकता है कि अनुमतिबोधक संयुक्त क्रियाओंमें जहाँ 'दे' धातु का उपयोग होगा वहाँ रंजक क्रियाएँअनिवार्य रूप से आएंगी।

- **नित्यताबोधक संयुक्त क्रिया:** जिससेक्रिया से कार्य की नियमितता अथवा निरंतरता का बोध हो, वह 'नित्यताबोधक संयुक्त क्रिया' है।

जैसे- हवा चलती रही है। कारवां बढ़ता गया। बच्चा सोता रहा। सीता गीत गाती रही। रोहित हँसता गया।

मुख्य क्रिया के साथ 'जाना' या 'रहना' क्रिया जोड़ने से नित्यताबोधक संयुक्त क्रियाएँ बनती है।

जाना क्रिया को सर्वमान्य 8 रंजक क्रियाओं में से एक माना गया है एवं इसके प्रयोग की भी आवृत्ति काफी अधिक है और जाना क्रिया से ही गया क्रिया बनती है। अतः कहा जा सकता है कि

अनुमतिबोधक संयुक्त क्रियाओंमें रंजक क्रियाएँआती हैं।

- **इच्छाबोधक संयुक्त क्रिया** : इस क्रिया से कुछ कार्य - व्यापार करने की इच्छा प्रकट होती है।

जैसे- सीता पढ़ना चाहती है। वह घर जाना चाहता है। वह खाना चाहता है।

मुख्य क्रिया के साथ 'चाहना' क्रिया जोड़ने से इच्छाबोधक संयुक्त क्रियाएँ बनती हैं। इच्छा बोधक संयुक्त क्रिया में चाहना शब्द का उपयोग होता है जबकि 'चाहना' क्रिया को किसी भीवैयाकरण ने रंजक क्रिया नहीं माना है। क्योंकि 'चाहना' क्रिया वृत्ति सूचक है। अतः हम कह सकते हैं कि इच्छाबोधक संयुक्त क्रियाओं में रंजक क्रियाएँ नहीं आती हैं।

- **आवश्यकता बोधक संयुक्त क्रिया**: जिस संयुक्त क्रिया से कार्य की आवश्यकता का बोध हो, वह आवश्यकताबोधक संयुक्त क्रियाहै।

जैसे- यह कार्य उसे करना पड़ेगा। तुम्हें वहां जाना चाहिए। अभी बहुत काम होना है।

साधारण क्रिया के साथ 'पड़ना' या 'चाहिए' क्रियाओं को जोड़ने से आवश्यकता बोधक संयुक्त क्रियाएँ बनती हैं।

आवश्यकता बोधक संयुक्त क्रिया में 'चाहना' एवं 'पड़ना' क्रियाओं का उपयोग होता है, जबकि 'चाहना' क्रिया को किसी भीवैयाकरण ने रंजक क्रिया नहीं माना और 'पड़ना' क्रिया को अधिकतर वैयाकरणों ने रंजक क्रिया माना है। परंतु उपरोक्त वाक्यों का विश्लेषण करने पर हम कह सकते हैं कि 'पड़ना' क्रिया यहाँ वृत्ति की सूचना के लिए आयी है। अतः हम कह सकते हैं की आवश्यकताबोधक संयुक्त क्रियाओं में रंजक क्रियाएँ नहीं आ सकती हैं।

- **निश्चय बोधक संयुक्त क्रिया:** जिस संयुक्त क्रिया से मुख्य क्रिया के व्यापार की निश्चयता का बोध हो, उसे निश्चयबोधक संयुक्त क्रियाकहते हैं।

जैसे- अब यह कार्य मैं कर ही डालूँगा। वह इतने ही में गिर पड़ा। इतने में ही वह उठ बैठा।

इस प्रकार की क्रियाओं में पूर्णता और निश्चयाता रहती है।

उपर्युक्तउदाहरणों से हम देख सकते हैं कि 'ही' निपात के साथ 'डालना', 'पड़ना' आदि क्रियाएँनिश्चयबोधक संयुक्त क्रिया में आती हैं। अतः कह सकते हैं किनिश्चयबोधक संयुक्त क्रियाओं में रंजक क्रियाएँ हो सकती है ।

- **अभ्यास बोधकसंयुक्त क्रिया**: जिस संयुक्त क्रिया से कार्य करने के अभ्यास का बोध होता है। उसे अभ्यासबोधक संयुक्त क्रियाएँ कहते हैं । सामान्यतः भूतकालिक मुख्य क्रिया के साथ 'करना' क्रिया लगाने से अभ्यासबोधक संयुक्त क्रियाएँ बनती हैं।

जैसे- राम पढ़ा करता है। तुम रोया करते हो। मैं सोया करता हूँ। गीता गया करती है।

करना भी रंजक क्रिया नहीं है, क्योंकि यहाँ 'करना' क्रिया के करने के संबंध में है। अतः हम कह सकते हैं कि अभ्यासबोधक संयुक्त क्रियाओं में रंजक क्रियाएँ नहीं आती हैं।

- **शक्तिबोधक संयुक्त क्रिया :** इस संयुक्त क्रिया से कार्य करने की शक्ति अथवा सक्षमता का बोध होता है।

जैसे- सोहन चल सकता है। वह बोल सकता है। मैं खा सकता हूँ। इसमें मुख्य क्रिया के साथ 'सकना' क्रिया जोड़ी जाती है।

सकना भी रंजक क्रिया नहीं है यद्यपि कुछविद्वानों जैसे -पोरिज्जका,आर्येन्द्र शर्मा आदिने सकना को भीरंजक क्रिया के रूप में माना है, परंतु यदि देखा जाय तो सकना क्रिया मुख्य क्रिया के वृत्ति की सूचना दे रहा है, अर्थात कार्य के सामर्थ्य की सूचना दे रहा है। अतः हम कह सकते हैं कि शक्तिबोधक संयुक्त क्रियाओं में रंजक क्रियाएँ नहीं आती हैं।

- **अवकाशबोधक संयुक्त क्रिया** - जिससे क्रिया को निष्पन्नकरने के लिए अवकाश का बोध हो, वह अवकाशबोधक संयुक्त क्रियाहै।

जैसे- वह मुश्किल से रुक पाया; वह जाने न पाया। मैं बड़ी मुश्किल से उन्हें मिल पाया।

उपर्युक्तउदाहरणों से स्पष्ट हैकि यहाँ 'पाना' क्रिया अपने मूल कोशीय अर्थ में तोनहीं है, किंतु यहाँ पर 'पया' वृति सूचक है। यद्यपिमैकग्रेकर,पाहवा,पोरिज्जका,आर्येन्द्र शर्मा आदिविद्वानों ने भी 'पाना' क्रिया को रंजक माना है। किंतु बहुत सारे अन्य विद्वानोंजैसे –सूरजभान सिंह,हैकर, केलाग, मैसीकाअदि ने 'पाना' को रंजक नहीं माना है। अतः कह सकते हैं कि अवकाशबोधकसंयुक्त क्रियाओं में रंजक क्रियाएँनहींआती हैं। कभी कभी'सकना' एवं 'पाना' क्रिया का व्यवहार भीएक जैसा रहता है। जैसे- मैं अपना कार्य समाप्त नहीं कर सका। मैं अपना कार्य समाप्त नहीं कर पाया।

- **पुनरुक्त संयुक्त क्रिया:** जब दो एक जैसी क्रियाओं अथवा समान ध्वनि वाली क्रियाओं का संयोग होता है, तब उन्हें 'पुनरुक्त संयुक्त क्रिया' कहते हैं।

जैसे- वह पढ़ता-लिखता रहता है। वह यहाँ आया-जाया करता है। वह दौड़ा-धूपा करता है। वे मिलते-जुलते रहते हैं। तुम कुछ खाया-पिया करो।

उपर्युक्तउदाहरणों से स्पष्ट हैकि पुनरुक्त संयुक्तक्रियाओं में दूसरी क्रिया या तो अपने मूल कोशीय अर्थ में होती है या फिर उसका कोई अर्थ नहीं होता है, वे केवल प्रतिध्वनि के लिए प्रयुक्त होती हैं ।

जैसे- पढ़ना-लिखना (दोनों क्रियाओं का अपना स्वतंत्र कोशीय अर्थ है) मिलना-जुलना (पहली क्रिया का अपना स्वतंत्र कोशीय अर्थ है परंतु दूसरी क्रिया निरर्थक है)

अतः कह जा सकता हैकि 'पुनरुक्त संयुक्त क्रियाओं में रंजक क्रियाएँनहीं आती हैं।

विभिन्न क्रियाओं के विश्लेषण के दौरान यह भी पता चला कि रंजक क्रियाएँ सामान्यतः बोलचाल की भाषा में ज्यादा प्रयुक्त होती हैं।

संदर्भ सूची:

- सिंह, सूरजभान (2000). हिंदी का वाक्यात्मक व्याकरण. दिल्ली :साहित्य सहकार.
- तिवारी, भोलानाथ एवं अन्य (1984). हिंदी भाषा की आर्थी संरचना. दिल्ली: साहित्य सहकार.
- पाण्डेय, अनिल कुमार (2010). हिंदी संरचना के विविध पक्ष. नई दिल्ली: प्रकाशन संस्थान.
- गुरु, कामता प्रसाद (1920). हिंदी व्याकरण. वाराणसी:नागरी प्रचारिणी सभा.
- सिंह, काशीनाथ, हिंदी में संयुक्त क्रियाएँ, इलाहाबाद : रचना प्रकाशन.